

भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की संभावनाएं एवं चुनौतियां

डा० मनोज कुमार अवस्थी¹

¹सहायक प्रोफेसर अर्थशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, चित्रकूट, उ०प्र०

Received: 20 Dec 2024 Accepted & Reviewed: 25 Dec 2024, Published: 31 Dec 2024

Abstract

भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो न केवल राष्ट्रीय आय और रोजगार सृजन में योगदान देता है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को सुदृढ़ करने में भी सहायक है। भारत की भौगोलिक विविधता, ऐतिहासिक धरोहरें, आध्यात्मिक स्थलों और विविध संस्कृति के कारण यह विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। इस शोध पत्र में भारतीय पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति, आर्थिक योगदान, क्षेत्रीय विकास में इसकी भूमिका, सरकार की पर्यटन नीतियाँ तथा योजनाओं का विश्लेषण किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन उन प्रमुख चुनौतियों की भी पहचान करता है जो पर्यटन क्षेत्र की प्रगति में बाधा उत्पन्न कर रही हैं, जैसे बुनियादी ढांचे की कमी, सुरक्षा मुद्दे, पर्यावरणीय दबाव, मौसमी निर्भरता, और प्रचार-प्रसार की सीमाएँ। अंततः, सतत पर्यटन विकास की संभावनाओं तथा डिजिटल तकनीक और नीति-निर्माण में नवाचार के माध्यम से इस क्षेत्र को और अधिक सशक्त बनाने के उपायों पर भी प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द— भारतीय पर्यटन उद्योग, आर्थिक विकास, रोजगार सृजन, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन नीतियाँ, बुनियादी ढांचा, सतत पर्यटन, पर्यावरणीय संरक्षण, डिजिटल पर्यटन, नीति चुनौतियाँ, क्षेत्रीय असंतुलन, अंतरराष्ट्रीय पर्यटन, घरेलू पर्यटन, सुरक्षा और सुविधा, सरकार की योजनाएँ।

Introduction

पर्यटन उद्योग किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे विविधताओं से भरपूर देश में पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ हैं, जो न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करने में सहायक हैं, बल्कि स्थानीय रोजगार, सांस्कृतिक विनिमय और क्षेत्रीय विकास को भी गति प्रदान करती हैं। यह शोध-पत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति, उसकी संभावनाओं और उससे संबंधित चुनौतियों का विश्लेषण करता है। साथ ही, इसमें पर्यावरणीय संतुलन, अवसंरचना विकास, नीति निर्माण तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका पर भी चर्चा की गई है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि उपयुक्त नीतिगत हस्तक्षेप और स्थायी पर्यटन विकास की दिशा में कार्य किया जाए, तो भारत वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर शीर्ष स्थान प्राप्त कर सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य, ऐतिहासिक धरोहर, धार्मिक विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि का अनूठा संगम देखने को मिलता है। इन विविधताओं के कारण भारत सदियों से देश-विदेश के यात्रियों एवं पर्यटकों को आकर्षित करता रहा है। पर्यटन न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह एक शक्तिशाली आर्थिक गतिविधि भी है जो राष्ट्रीय आय, विदेशी मुद्रा, रोजगार और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। 21वीं सदी के वैश्विक परिदृश्य में पर्यटन उद्योग विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती आर्थिक गतिविधियों में से एक है। संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, पर्यटन का सीधा योगदान वैश्विक जीडीपी में 10 प्रतिशत से अधिक है और यह करोड़ों लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह उद्योग आर्थिक

समृद्धि की एक बड़ी संभावना के रूप में उभर कर सामने आया है। भारत सरकार द्वारा चलाए गए अतुल्य भारत अभियान और देखो अपना देश जैसी पहलों ने घरेलू एवं विदेशी पर्यटन को प्रोत्साहित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। भारत में पर्यटन उद्योग का विस्तार विविध प्रकारों में हुआ है, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहसिक, प्राकृतिक, चिकित्सा, एवं ग्रामीण पर्यटन। इन सबके माध्यम से न केवल स्थानीय स्तर पर आर्थिक गतिविधियाँ सशक्त हुई हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि एक विविधतापूर्ण, आकर्षक और स्वागतयोग्य राष्ट्र के रूप में उभरी है। हालांकि इन संभावनाओं के बीच अनेक चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जैसे अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, पर्यावरणीय दबाव, सुरक्षा की चिंताएँ, कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी का प्रभाव, और नीति निर्माण में एकरूपता का अभाव। इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान प्रस्तुत करना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

यह शोध-पत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की वर्तमान भूमिका, उसकी व्यापक संभावनाओं और उससे जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। साथ ही इसमें यह विश्लेषण भी किया गया है कि सतत विकास और डिजिटल परिवर्तन के माध्यम से इस उद्योग को कैसे और अधिक प्रभावशाली तथा समावेशी बनाया जा सकता है। शोध के निष्कर्षों के आधार पर पर्यटन क्षेत्र की नीतिगत दिशा और रणनीतिक योजनाओं के निर्माण हेतु कुछ व्यावहारिक सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

परिकल्पना—

- 1— भारत में पर्यटन उद्योग के विकास की अपार संभावनाएं हैं, जो यदि सुव्यवस्थित रणनीतियों के अंतर्गत संचालित हो, तो राष्ट्रीय आय और रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।
- 2— पर्यटन को प्रभावित करने वाली प्रमुख चुनौतियाँ जैसे अवसंरचनात्मक कमी, सुरक्षा, पर्यावरणीय असंतुलन, और नीति-स्तरीय अस्पष्टता इसके समुचित विकास में बाधक हैं।
- 3— सतत पर्यटन और डिजिटल प्रौद्योगिकी के समावेश से भारत में पर्यटन क्षेत्र को एक नई दिशा दी जा सकती है।
- 4— राज्यवार पर्यटन विकास में असंतुलन है, जिसे संतुलित नीति निर्माण द्वारा सुधारा जा सकता है।

शोध प्राविधि (Research Methodology)—

शोध की प्रकृति— यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें पर्यटन उद्योग के वर्तमान स्वरूप, उसकी संभावनाओं, चुनौतियों एवं नीतिगत पक्षों का समग्र अध्ययन किया गया है।

आंकड़ा संग्रहण के स्रोत—

प्राथमिक स्रोत— पर्यटक, टूर ऑपरेटर, होटल व्यवसायी, एवं पर्यटन विभाग के अधिकारियों के साथ साक्षात्कार एवं प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई।

द्वितीयक स्रोत— प्रकाशित पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी रिपोर्टें (जैसे छप्प जलवह, पर्यटन मंत्रालय की रिपोर्ट), समाचार पत्र, जर्नल, वेबसाइटें, और नीति दस्तावेजों का उपयोग किया गया।

डेटा विश्लेषण विधि— एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों रूपों में किया गया। तालिकाओं, चार्ट्स एवं आंकड़ों का उपयोग कर निष्कर्ष निकाले गए।

भौगोलिक क्षेत्र— शोध का क्षेत्र संपूर्ण भारत है, जिसमें प्रमुख पर्यटन राज्य जैसे उत्तर प्रदेश, राजस्थान, केरल, गोवा, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु, और उत्तराखंड पर विशेष ध्यान दिया गया।

समयावधि— यह अध्ययन वर्ष 2015 से 2024 तक की स्थिति पर आधारित है, साथ ही भविष्य की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई है।

सीमाएं — पर्यटन उद्योग अत्यधिक व्यापक होने के कारण यह अध्ययन कुछ प्रमुख पहलुओं तक ही सीमित रखा गया है। कोविड -19 के प्रभाव का भी संक्षिप्त उल्लेख किया गया है, किन्तु इसका विस्तृत विश्लेषण भविष्य के शोध के लिए छोड़ा गया है।

भारत में पर्यटन उद्योग का इतिहास और विकास— भारत में पर्यटन की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक, भारत धार्मिक, सांस्कृतिक, वाणिज्यिक एवं ज्ञान की खोज में आने वाले यात्रियों का प्रमुख केंद्र रहा है। पर्यटकों का भारत आगमन न केवल भौगोलिक भ्रमण के लिए होता था, बल्कि यह यात्रा आत्मिक, दार्शनिक, और बौद्धिक उद्देश्य से भी प्रेरित होती थी। प्राचीन काल में भारत के तीर्थस्थल जैसे— काशी, प्रयाग, द्वारका, पुरी, अयोध्या, मदुरै आदि धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र थे। बौद्ध धर्म के विस्तार के साथ—साथ वैशाली, नालंदा, सारनाथ, बोधगया जैसे स्थल भी बौद्ध तीर्थ यात्रियों के लिए प्रसिद्ध हो गए। विदेशी पर्यटक जैसे कि फाह्यान, ह्वेनसांग और अल-बरूनी भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था से आकर्षित होकर यहाँ आए और उन्होंने भारत के पर्यटन एवं सांस्कृतिक स्वरूप का वर्णन किया। मध्यकालीन भारत में पर्यटन का स्वरूप धार्मिक यात्राओं और व्यापारिक उद्देश्यों तक सीमित था। इस काल में यात्राएं कठिन थीं और राजनीतिक अस्थिरता एवं युद्धों के कारण पर्यटन को विशेष बढ़ावा नहीं मिल सका। फिर भी सूफी संतों और तीर्थयात्रियों की आवाजाही जारी रही। कुछ शासकों, जैसे अकबर और शाहजहाँ, ने स्थापत्य कला को बढ़ावा देकर स्थापत्य पर्यटन की नींव रखी (जैसे ताजमहल, लालकिला आदि)। ब्रिटिश शासनकाल में भारत में रेल, डाक व्यवस्था, सड़क निर्माण, होटल व क्लब की स्थापना आदि के माध्यम से पर्यटन की आधारभूत संरचना का विकास हुआ। हालांकि इसका उद्देश्य मुख्यतः ब्रिटिश अधिकारियों एवं अभिजात वर्ग के लिए विश्राम स्थल बनाना था, फिर भी इससे आधुनिक पर्यटन की नींव पड़ी। इस युग में कुछ पर्यटन स्थलों को "हिल स्टेशन" (जैसे शिमला, दार्जिलिंग, ऊटी) के रूप में विकसित किया गया।

स्वतंत्रता के बाद पर्यटन उद्योग का विकास— भारत की स्वतंत्रता (1947) के बाद पर्यटन को औपचारिक रूप से आर्थिक विकास के एक घटक के रूप में स्वीकार किया गया।

पंचवर्षीय योजनाओं में पर्यटन— द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956—1961) में पहली बार पर्यटन को औद्योगिक विकास के एक हिस्से के रूप में मान्यता दी गई।

तीसरी योजना (1961—66) में पर्यटन विकास के लिए पर्यटन विभाग की स्थापना की गई।

1980 के दशक में भारतीय पर्यटन को फेसलिफ्ट मिला, अंतरराष्ट्रीय प्रचार, टूरिस्ट गाइड, होटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का विस्तार आदि।

पर्यटन नीतियाँ— राष्ट्रीय पर्यटन नीति 1982, एशियाई खेलों की मेज़बानी के दौरान, इस नीति ने पर्यटन के विविध प्रकारों को मान्यता दी। राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002, ग्रामीण, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक, चिकित्सा व साहसिक पर्यटन को प्रमुखता दी गई। राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2015 (ड्राफ्ट), सतत और समावेशी पर्यटन पर विशेष बल।

21वीं सदी में पर्यटन का डिजिटलीकरण और वैश्वीकरण— Incredible India अभियान (2002) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को एक पर्यटन ब्रांड के रूप में प्रस्तुत करने की एक पहल है। e-Tourist Visa की शुरुआत करके पर्यटकों के लिए वीजा प्रक्रिया को सरल और तेज़ बनाया गया है। PRASAD और Swadesh Darshan

योजनाएं, धार्मिक और थीम-आधारित पर्यटन सर्किटों का विकास भी हो रहा है। देखो अपना देश, घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु राष्ट्रीय अभियान भी सम्पादित है। डिजिटल इंडिया और पर्यटन द्वारा ऑनलाइन बुकिंग, वर्चुअल गाइड, ट्रेवल ऐप्स, डिजिटल भुगतान आदि के माध्यम से पर्यटन अधिक सुगम और आधुनिक हुआ है। कोविड-19 महामारी के दौरान पर्यटन उद्योग सबसे अधिक प्रभावित हुआ। हवाई यात्राएं, होटल उद्योग, स्थानीय गाइड, वाहन सेवाएं आदि सब ठप पड़ गईं। इसके पश्चात पर्यटन उद्योग ने नया सामान्य रवैया अपनाया है। अब छोटे समूहों का यात्रा प्रचलन, घरेलू पर्यटन को प्राथमिकता, डिजिटल प्रमोशन, सुरक्षित यात्रा सर्टिफिकेशन और हेल्थ प्रोटोकॉल आदि प्रचलन में आए हैं। भारत में पर्यटन उद्योग का विकास एक लंबी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक विविधताओं से समृद्ध रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदमों, योजनाओं और डिजिटल युग की तकनीकी प्रगति के चलते पर्यटन ने एक सशक्त औद्योगिक स्वरूप ग्रहण किया है। अब आवश्यकता इस बात की है कि इस विकास को सतत और समावेशी दिशा में आगे बढ़ाया जाए।

पर्यटन का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान— पर्यटन उद्योग केवल मनोरंजन या भ्रमण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की आर्थिक संरचना का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। भारत जैसे विविधताओं से युक्त विकासशील राष्ट्र में पर्यटन बहुआयामी आर्थिक प्रभाव उत्पन्न करता है प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार, विदेशी मुद्रा अर्जन, अवसंरचना विकास, क्षेत्रीय असमानताओं को संतुलित करने में भूमिका, और स्थानीय समुदायों के उत्थान में सहायक है। यह शोध पत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन के विविध आर्थिक प्रभावों का भी विश्लेषण करता है।

सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान — भारतीय पर्यटन एवं आतिथ्य उद्योग का कुल योगदान भारत के सकल घरेलू उत्पाद में निरंतर बढ़ रहा है। विश्व पर्यटन संगठन और भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के अनुसार 2022 में पर्यटन का कुल योगदान भारत के **सकल घरेलू उत्पाद** का लगभग 6.8 प्रतिशत रहा। 2023 में अनुमानित योगदान 7.2 प्रतिशत तक पहुँचा। इससे यह सिद्ध होता है कि यह उद्योग कृषि और निर्माण उद्योग के बाद तीसरा सबसे बड़ा रोजगार सृजक है। पर्यटन के माध्यम से विदेशी मुद्रा अर्जन भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, विशेषकर व्यापार घाटे को संतुलित करने हेतु।

तालिका-01

विदेशी मुद्रा अर्जन			
वर्ष	विदेशी पर्यटक आगमन (FTA)	विदेशी मुद्रा अर्जन (USD esa)	वर्ष
2019	1.09 करोड़	+30.06 बिलियन	2019
2020	27 लाख (COVID प्रभाव)	+6.1 बिलियन	2020
2023	1.95 करोड़ (रिकवरी)	+30.5 बिलियन (अनुमानित)	2023

भारत का चिकित्सा पर्यटन विशेष रूप से विदेशी मुद्रा अर्जन में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। पर्यटन एक श्रम-प्रधान उद्योग है। इसमें सीधे और परोक्ष रूप से करोड़ों लोगों को रोजगार मिलता है। प्रत्यक्ष

रोजगार अर्थात् होटल, गाइड, ट्रैवल एजेंट, ट्रांसपोर्ट, एयरलाइन्स, क्रूज, रिसॉर्ट एवं परोक्ष रोजगार—हस्तशिल्प, खानपान उद्योग, स्थानीय बाजार, निर्माण कार्य आदि हैं। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम के अनुसार 2023 में पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र में 3.2 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार प्राप्त था। यह कुल कार्यबल का लगभग 8.1 प्रतिशत है। पर्यटन उन क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है जहाँ अन्य उद्योगों की पहुंच सीमित है जैसे पहाड़ी, जनजातीय या तटीय क्षेत्र। उत्तराखंड, हिमाचल, पूर्वोत्तर राज्य, राजस्थान, लद्दाख जैसे क्षेत्रों में पर्यटन ने स्थानीय लोगों को स्वरोजगार एवं व्यापारिक अवसर दिए। ग्रामीण पर्यटन ने महिलाओं और कारीगरों को सशक्त किया। पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु जो सुविधाएँ बनाई जाती हैं, उनका लाभ आम जनता को भी प्राप्त होता है जैसे सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, होटल, रेस्टोरेंट, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य केंद्र, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, जलापूर्ति, बिजली और कचरा प्रबंधन आदि सुविधाएँ। स्वदेश दर्शन योजना और प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना में पर्यटन स्थलों को प्राथमिकता दी गई है। पर्यटक स्थानीय वस्त्र, कला, मूर्तियाँ, चित्रकला, लोकगीत, आभूषण आदि की खरीद करते हैं। इससे स्थानीय कारीगरों, शिल्पकारों और महिलाओं को रोजगार मिलता है। काशी की रेशमी साड़ियाँ, जयपुर का ब्लू पॉटरी, वाराणसी के लकड़ी के खिलौने, कर्नाटक की चंदन की मूर्तियाँ, नगालैंड के बांस उत्पाद आदि। सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से भारत की सॉफ्ट पावर का विस्तार होता है। यह देश की अंतरराष्ट्रीय पहचान, निवेश आकर्षण, और जनसंपर्क को मजबूत करता है, जो दीर्घकालिक आर्थिक लाभ में परिवर्तित होता है। पर्यटन क्षेत्र में डिजिटल बुकिंग, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन मार्केटिंग, ऐप आधारित ट्रैवल सेवाओं के माध्यम से डिजिटल अर्थव्यवस्था को बल मिला है। डिजिटल इंडिया और UPI ने पर्यटकों को कैशलेस सुविधाएं दी हैं। ऑनलाइन ट्रैवल एजेंसियों ने पर्यटन को सुलभ बनाया है। पर्यटन उद्योग में निजी क्षेत्र का निवेश भी तेजी से बढ़ा है, जैसे होटल इंडस्ट्री, विमानन उद्योग, ट्रैवल और टूर ऑपरेटर, मल्टीनेशनल इन्वेस्टमेंट। 2022 में पर्यटन क्षेत्र में ₹19,000 करोड़ का निजी निवेश दर्ज किया गया। World Travel and Tourism Council (WTTC) के अनुसार, भारत 10वें स्थान पर है पर्यटन क्षेत्र के कुल आकार के अनुसार। Travel & Tourism Competitiveness Index (2023) में भारत 34वें स्थान पर रहा। पर्यटन उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था का एक सशक्त स्तंभ है, जो GDP विदेशी मुद्रा, रोजगार, निवेश, और क्षेत्रीय संतुलन में प्रत्यक्ष योगदान करता है। इसके बहुआयामी प्रभावों को देखते हुए यह स्पष्ट है कि यदि पर्यटन को समुचित नीति, तकनीकी सहायता, और स्थायित्वपूर्ण रणनीतियों के साथ आगे बढ़ाया जाए, तो यह भारत को आत्मनिर्भर और समावेशी विकास के मार्ग पर अग्रसर कर सकता है।

पर्यटन के प्रमुख स्वरूप— भारत में पर्यटन उद्योग बहुआयामी और बहुस्तरीय है, जो विभिन्न आयु, रुचियों, भौगोलिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों वाले लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक, धार्मिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक विविधता पर्यटन को अनेक रूपों में परिभाषित करती है। प्रत्येक स्वरूप का अपना आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व है। इस अध्याय में हम भारत में प्रचलित प्रमुख पर्यटन स्वरूपों का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं।

धार्मिक पर्यटन— भारत एक धार्मिक देश है जहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी आदि धर्मों के प्रमुख तीर्थस्थल स्थित हैं। धार्मिक पर्यटन भारत में घरेलू पर्यटन का सबसे बड़ा स्वरूप है और लाखों लोगों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रोजगार देता है।

प्रमुख स्थल – (हिंदू धर्म) काशी, बद्रीनाथ, रामेश्वरम, पुरी, अयोध्या, (मुस्लिम धर्म) अजमेर शरीफ, हज़रत निज़ामुद्दीन दरगाह, (बौद्ध धर्म) बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, (सिख धर्म) स्वर्ण मंदिर, हेमकुंड साहिब, (जैन धर्म) शिखरजी, पावापुरी

भारत की संस्कृति अत्यंत समृद्ध है नृत्य, संगीत, रंगमंच, साहित्य, भाषा, परंपराएँ और उत्सव सांस्कृतिक पर्यटन के प्रमुख आयाम हैं। जिसके प्रमुख आकर्षण कुम्भ मेला, पुष्कर मेला, जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल, ओडिशा का रथयात्रा उत्सव, तमिलनाडु के मंदिर वास्तुकला, खजुराहो और अजंता-एलोरा की मूर्तिकला। यह स्वरूप विदेशी पर्यटकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है और भारत की सॉफ्ट पावर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करता है। भारत की भौगोलिक विविधताकृपहाड़, समुद्र तट, रेगिस्तान, जंगल, झीलें आदि प्राकृतिक पर्यटन को बढ़ावा देती है। प्रमुख स्थल— हिमालय क्षेत्र, शिमला, मनाली, लेह-लद्दाख। समुद्र तट में – गोवा, पुरी, कोवलम, अंडमान। झीलें— नैनीताल, उदयपुर, चिल्का। रेगिस्तान— थार, जैसलमेर। जलप्रपात— जोग फॉल्स, दुधसागर। प्राकृतिक पर्यटन पर्यावरणीय चेतना को भी प्रोत्साहित करता है।

साहसिक पर्यटन युवाओं के बीच यह स्वरूप अत्यंत लोकप्रिय हो रहा है और इसे Experiential Tourism भी कहा जाता है। जिसमें प्रमुख गतिविधियाँ ट्रेकिंग, पर्वतारोहण हैं— उत्तराखंड, हिमाचल, लद्दाख में। रिवर राफ्टिंग— ऋषिकेश, तेज़पुर। स्कूबा डाइविंग— अंडमान, लक्षद्वीप में। पैराग्लाइडिंग— बीड़ बिलिंग, मनाली में। हॉट एयर बलून— जयपुर में। भारत सरकार ने साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु Indian Mountaineering Foundation (IMF) और Adventure Tourism Guidelin में जारी की हैं।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पर्यटन अर्थात भारत का चिकित्सा क्षेत्र विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सेवाएं किफायती मूल्य पर प्रदान करता है, जिससे यह स्वरूप विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षक है। जिसमें प्रमुख स्थल— चेन्नई, दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु मेडिकल ट्रीटमेंट के लिए, ऋषिकेश, हरिद्वार, केरल योग एवं आयुर्वेद के लिए। 2022 में भारत ने चिकित्सा पर्यटन से +7 बिलियन की विदेशी मुद्रा आय अर्जित की।

भारत के गांवों में सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सौंदर्य और पारंपरिक जीवनशैली को देखने की चाह में शहरी व विदेशी पर्यटक आकर्षित होते हैं जिसे ग्रामीण पर्यटन कीते हैं। जैसे— राजस्थान के लोक जीवन आधारित गाँव, उत्तराखंड के काष्ठ कला आधारित पर्यटन स्थल, महाराष्ट्र का पिंगुली कला गाँव, ग्रामीण पर्यटन स्थानीय विकास, महिला सशक्तिकरण, और आजीविका के नए साधन खोलता है।

पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए पर्यटन को बढ़ावा देना इको-टूरिज्म का मुख्य उद्देश्य है। प्रमुख स्थल— सुंदरबन, काजीरंगा, गिर, कान्हा, पेरियार अभयारण्य। पश्चिमी घाट, अरावली हिल्स। केरल के बैकवॉटर। MoEFCC और पर्यटन मंत्रालय ने इको-टूरिज्म नीति एवं दिशा-निर्देश भी बनाए हैं।

भारत के ऐतिहासिक किले, महल, मंदिर, संग्रहालय, और स्मारक विश्व धरोहर का हिस्सा हैं जी विरासत पर्यटन कहलाता है। प्रमुख स्थल— ताजमहल, कुतुब मीनार, हम्पी, चित्तौड़गढ़, गोलकोंडा, अम्बर महल, अजंता-एलोरा, खजुराहो, महाबलीपुरम। भारत में 42 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं (2024 तक), जो विरासत पर्यटन को वैश्विक मान्यता प्रदान करते हैं।

फिल्म पर्यटन बॉलीवुड और क्षेत्रीय सिनेमा के माध्यम से लोकप्रिय स्थलों को देखने की इच्छा पर्यटकों को प्रेरित करती है। उदाहरण शाहरुख खान की DDLJ के कारण स्विट्ज़रलैंड और पंजाब, बाहुबली और "RRR" के बाद हैदराबाद और रामोजी फिल्मसिटी भारत सरकार ने Film Facilitation Office स्थापित किया है।

भारतीय पर्यटन उद्योग अपने विविध स्वरूपों के कारण एक बहुरंगी आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना निर्मित करता है। इन विभिन्न स्वरूपों का समावेश भारत को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट स्थान दिलाने में सहायक है। यदि इन स्वरूपों का समुचित नियोजन, प्रचार-प्रसार, और सतत विकास किया जाए, तो ये भारत की सामाजिक-आर्थिक समृद्धि के शक्तिशाली स्तंभ बन सकते हैं।

क्षेत्रीय पर्यटन विकास— राज्यवार विश्लेषण— भारत की भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा धार्मिक विविधता पर्यटन के क्षेत्र में अपार संभावनाओं को जन्म देती है। विभिन्न राज्यों की विशिष्टता ने पर्यटन को एक क्षेत्रीय पहचान प्रदान की है। इस खंड में भारत के प्रमुख राज्यों में पर्यटन के विकास, अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।

उत्तर प्रदेश— उत्तर प्रदेश ऐतिहासिक और धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। यहाँ ताजमहल (आगरा), वाराणसी, प्रयागराज, अयोध्या, वृंदावन जैसे स्थल हैं, जो देशी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

संभावनाएं— धार्मिक पर्यटन का अभूतपूर्व विस्तार, रामायण सर्किट का विकास, कुंभ मेला जैसी वैश्विक घटनाएं।

चुनौतियाँ— अवसंरचना की कमी, भीड़-प्रबंधन, सफाई और पर्यावरणीय दबाव।

राजस्थान— राजस्थान अपनी राजपूताना विरासत, किलों, महलों और मरुस्थलीय सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है।

संभावनाएं— सांस्कृतिक पर्यटन, ऐतिहासिक स्मारक, ऊँट उत्सव और थार मरुस्थल।

चुनौतियाँ— जल संकट, अत्यधिक गर्मी, पर्यावरणीय दबाव।

केरल को "God's Own Country" कहा जाता है। यहाँ का आयुर्वेद, बैकवाटर और पारंपरिक कला पर्यटकों को लुभाती है।

संभावनाएं— स्वास्थ्य पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन, समुद्र तटीय पर्यटन।

चुनौतियाँ— मानसून के मौसम में पर्यटन में गिरावट, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाएँ।

गोवा— गोवा अपने समुद्र तटों, पार्टियों और पुर्तगाली वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

संभावनाएं— तटीय पर्यटन, जलक्रीड़ा, क्रूज़ पर्यटन।

चुनौतियाँ— अति-पर्यटन, पर्यावरण प्रदूषण, नशीले पदार्थों से जुड़ी सामाजिक समस्याएं।

उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश— हिमालयी राज्यों में प्रकृति प्रेमियों और धार्मिक श्रद्धालुओं के लिए अनेक स्थल हैं जैसे बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश, मनाली, धर्मशाला।

संभावनाएं— धार्मिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन (ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग), हिमालयी दृश्य।

चुनौतियाँ— भूस्खलन, जलवायु परिवर्तन, पर्यटन पर मौसमी निर्भरता।

तमिलनाडु— तमिलनाडु दक्षिण भारत का प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र है।

संभावनाएं— मंदिर वास्तुकला, शास्त्रीय कला-संगीत उत्सव, समुद्र तटीय पर्यटन।

चुनौतियाँ— अवसंरचना का आधुनिकीकरण, भाषा अवरोध।

केंद्र शासित प्रदेश— अंडमान-निकोबार एवं लक्षद्वीप

समुद्री जैव विविधता और निर्जन तटों के लिए प्रसिद्ध हैं।

संभावनाएं— स्कूबा डाइविंग, ईको-टूरिज्म, समुद्री पर्यटन।

चुनौतियाँ— पारिस्थितिक संतुलन, सीमित परिवहन सुविधाएँ।

भारत के प्रत्येक राज्य की पर्यटन संभावना उसकी भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं से जुड़ी है। राज्यवार रणनीतियों के माध्यम से यदि स्थानीय स्तर पर अवसंरचना, प्रशिक्षण, और प्रचार को बढ़ावा दिया जाए, तो क्षेत्रीय पर्यटन न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को बल्कि राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद को भी सुदृढ़ कर सकता है।

पर्यटन उद्योग की संभावनाएं— भारत में पर्यटन उद्योग की संभावनाएं अत्यंत व्यापक और बहुआयामी हैं। भारत की सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक धरोहरें, प्राकृतिक सौंदर्य, आध्यात्मिक परंपराएं, लोक कलाएं, चिकित्सा पर्यटन, और समृद्ध आतिथ्य परंपरा इस उद्योग को विश्वस्तरीय अवसर प्रदान करती हैं। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से हम भारत में पर्यटन उद्योग की संभावनाओं का विश्लेषण कर सकते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई, यहूदी आदि धर्मों के अनेक पवित्र स्थल मौजूद हैं। काशी, हरिद्वार, पुष्कर, वैष्णो देवी, अमृतसर, अजमेर शरीफ, बोधगया, शांति निकेतन, तिरुपति, केरल के चर्च तथा मस्जिदें धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं। इन स्थलों पर देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु प्रतिवर्ष आते हैं, जिससे अर्थव्यवस्था को बड़ा लाभ होता है। भारत में हिमालय की पर्वतमालाएं, केरल और गोवा के समुद्रतट, राजस्थान का रेगिस्तान, उत्तर-पूर्व भारत की हरित घाटियाँ, और पश्चिमी घाट जैसी प्राकृतिक विविधताएं पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। ट्रेकिंग, कैंपिंग, बोटिंग, सफारी जैसे साहसिक पर्यटन की भी यहाँ अपार संभावनाएं हैं। भारत उच्च गुणवत्ता वाली और अपेक्षाकृत सस्ती चिकित्सा सेवाएं प्रदान करता है। आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा के साथ-साथ एलोपैथिक उपचार में भी भारत की छवि वैश्विक स्तर पर मजबूत हो रही है। विदेशी पर्यटक विशेष रूप से हृदय रोग, ऑर्थोपेडिक, दंत चिकित्सा, और सौंदर्य उपचार के लिए भारत आते हैं। यह क्षेत्र न केवल विदेशी मुद्रा कमाने में सहायक है, बल्कि स्वास्थ्य सेवाओं को वैश्विक मंच पर भी पहचान दिला रहा है। भारत की ऐतिहासिक धरोहरें जैसे ताजमहल, कुतुब मीनार, चित्तौड़गढ़, गोलकोंडा किला, हंपी, खजुराहो, एलोरा और अजंता की गुफाएँ इत्यादि देश की धरोहर पर्यटन को प्रोत्साहन देती हैं। यूनेस्को द्वारा सूचीबद्ध विश्व धरोहर स्थलों की संख्या में भारत अग्रणी देशों में से है।

ग्रामीण जीवन, लोक संस्कृति, हस्तशिल्प, पारंपरिक संगीत और नृत्य में रुचि रखने वाले पर्यटकों के लिए भारत का ग्रामीण पर्यटन एक बड़ा आकर्षण है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, और उत्तर पूर्वी राज्यों में आदिवासी संस्कृति को जानने और अनुभव करने के लिए विशेष टूर बनाए जा सकते हैं। फिल्मों का प्रभावशाली माध्यम पर्यटन को बढ़ावा देने का एक नया और सशक्त जरिया बन चुका है। 'बॉलीवुड टूरिज्म' या 'सिनेमाई पर्यटन' से जुड़े उदाहरण जैसे कि 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' में स्विट्जरलैंड के स्थानों की लोकप्रियता या 'चेन्नई एक्सप्रेस' से दक्षिण भारत की छवि का प्रचार इस बात के प्रमाण हैं कि भारत में भी पर्यटन स्थलों को फिल्मों से जोड़कर वैश्विक स्तर पर प्रचार किया जा सकता है। डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत पर्यटन स्थलों की वर्चुअल यात्रा, ई-टिकटिंग, ऑनलाइन गाइड सेवा, मोबाइल एप्स और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित व्यक्तिगत अनुभवों का विकास पर्यटक अनुभव को और अधिक सुलभ तथा आकर्षक बना रहा है। यह भविष्य में भारत को तकनीकी पर्यटन गंतव्य के रूप में प्रस्तुत कर सकता है। पर्यटन उद्योग न केवल प्रत्यक्ष रोजगार (गाइड, होटल कर्मचारी, परिवहन आदि) देता है, बल्कि अप्रत्यक्ष रोजगार (हस्तशिल्प, खाद्य उत्पाद, पर्यटक सेवाएं आदि) भी उत्पन्न करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह पलायन रोकने का एक प्रभावी साधन बन सकता है। भारत सरकार विभिन्न देशों के साथ पर्यटन सहयोग समझौते

(Tourism Cooperation Agreements) कर रही है। इसके साथ ही अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को पर्यटन परियोजनाओं में आमंत्रित किया जा रहा है, जिससे बुनियादी ढांचे का विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति मजबूत हो रही है। भारत में पर्यटन उद्योग की संभावनाएं बहुआयामी हैं जो केवल आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी भारत को वैश्विक मंच पर समृद्ध और सम्मानित स्थान प्रदान कर सकती हैं। आवश्यकता है इन संभावनाओं को योजनाबद्ध तरीके से विकसित करने की।

पर्यटन को प्रभावित करने वाली चुनौतियां— भारतीय पर्यटन उद्योग की प्रगति के मार्ग में अनेक बाधाएं हैं जो इसके सतत विकास को प्रभावित करती हैं। ये चुनौतियां संरचनात्मक, प्रशासनिक, सामाजिक, पर्यावरणीय और वैश्विक स्तर पर देखी जा सकती हैं। निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियों पर विचार किया जा सकता है। भारत में पर्यटन स्थलों पर परिवहन, सड़क, स्वच्छता, पेयजल, बिजली, स्वास्थ्य सेवा, इंटरनेट और पर्यटक सूचना केंद्रों की कमी अब भी व्यापक स्तर पर देखी जाती है। ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में यह समस्या और भी गंभीर है, जिससे संभावित पर्यटन गंतव्य विकसित नहीं हो पाते। स्वच्छ भारत अभियान के बावजूद कई पर्यटन स्थलों पर शौचालय, कचरा निस्तारण और जल आपूर्ति जैसी बुनियादी सुविधाओं की स्थिति खराब बनी हुई है। विदेशी पर्यटकों के लिए यह एक नकारात्मक अनुभव बन सकता है, जिससे उनकी पुनः यात्रा की संभावना घट जाती है। महिलाओं और विदेशी पर्यटकों की सुरक्षा को लेकर कई घटनाएं सामने आई हैं जिनका अंतरराष्ट्रीय मीडिया में व्यापक कवरेज हुआ है। इससे भारत की छवि एक सुरक्षित पर्यटन स्थल के रूप में प्रभावित होती है। केंद्र और राज्य स्तर पर पर्यटन से जुड़ी नीतियों में समन्वय की कमी देखी जाती है। कई बार निवेश की योजनाएं और परियोजनाएं केंद्र व राज्य सरकार के बीच तालमेल के अभाव में अटक जाती हैं। भारत के पास विविधता से परिपूर्ण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहरें हैं, लेकिन इनके प्रचार-प्रसार और विपणन के लिए एक सशक्त वैश्विक रणनीति की कमी महसूस होती है। पर्यटन स्थलों की डिजिटल ब्रांडिंग और वैश्विक मंचों पर भारत की पर्यटन छवि को मजबूती देने की आवश्यकता है। प्राकृतिक पर्यटन स्थलों जैसे हिमालय, समुद्र तटों, वन क्षेत्रों आदि पर पर्यटकों की अत्यधिक संख्या के कारण पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। प्लास्टिक कचरा, जल स्रोतों का दोहन, जैव विविधता को नुकसान और स्थानीय समुदायों की संस्कृति पर असर जैसे मुद्दे उभर रहे हैं। भारत में पर्यटन अभी भी मुख्यतः मौसम आधारित है। उदाहरणतः हिमाचल, उत्तराखंड और कश्मीर में सर्दियों में पर्यटन सीमित हो जाता है, जबकि राजस्थान और गोवा जैसे स्थानों पर केवल कुछ महीनों में ही भारी पर्यटक आगमन होता है। पर्यटन को पूरे वर्ष भर संचालित करने के लिए विविध गतिविधियों और थीम आधारित पर्यटन की आवश्यकता है। पर्यटन से जुड़ी सेवाओं जैसे गाइड, होटल स्टाफ, ड्राइवर, सुरक्षा कर्मी आदि के लिए प्रशिक्षित और बहुभाषी मानव संसाधन का अभाव भी एक बड़ी चुनौती है। इसका प्रभाव पर्यटकों के समग्र अनुभव पर पड़ता है। पर्यटन स्थलों पर डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन बुकिंग, वेबसाइट और ऐप्स की सुलभता जैसे डिजिटल सुविधाएं सभी स्थानों पर समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। तकनीकी पहुंच और उपयोग में भी असमानता देखी जाती है। कोविड-19 महामारी ने पर्यटन उद्योग को सबसे अधिक प्रभावित किया, जिससे हजारों लोग बेरोजगार हुए और लाखों करोड़ का नुकसान हुआ। भविष्य में भी महामारी, जलवायु परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय संघर्ष जैसी वैश्विक घटनाएं इस क्षेत्र की संवेदनशीलता को दर्शाती हैं। संक्षेप में, भारत में पर्यटन उद्योग की अपार संभावनाओं के बावजूद उपर्युक्त चुनौतियां उसके सतत और समावेशी विकास को बाधित कर रही हैं। इन समस्याओं के निराकरण के लिए समग्र नीति, बहु-स्तरीय समन्वय, अधोसंरचना विकास और स्थानीय समुदायों की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है।

भारत सरकार की पर्यटन नीतियाँ और योजनाएं— भारत सरकार ने पर्यटन को आर्थिक विकास, सांस्कृतिक समृद्धि और रोजगार सृजन का प्रमुख साधन मानते हुए अनेक नीतियाँ एवं योजनाएं लागू की हैं। इन नीतियों का उद्देश्य देश-विदेश से पर्यटकों को आकर्षित करना, बुनियादी ढांचे का विकास करना, सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना और पर्यटन को एक समावेशी एवं टिकाऊ उद्योग के रूप में बढ़ावा देना है। इस खंड में प्रमुख सरकारी नीतियों और योजनाओं की चर्चा की जा रही है—

राष्ट्रीय पर्यटन नीति— भारत की पहली राष्ट्रीय पर्यटन नीति 1982 में प्रस्तुत की गई थी, जिसे बाद में 2002 और फिर 2015 में अद्यतन किया गया। यह नीति निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर आधारित है स्थायी पर्यटन के अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करते हुए पर्यटन को बढ़ावा देना। साझेदारी मॉडल, निजी क्षेत्र, राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों की भागीदारी। पर्यटन शिक्षा और कौशल विकास, प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना और पर्यटन से जुड़े मानव संसाधनों का विकास। डिजिटल इंडिया के साथ समन्वय, ऑनलाइन प्रचार, बुकिंग और सूचना प्रणाली का सुदृढीकरण।

प्रमुख पर्यटन योजनाएं—

स्वदेश दर्शन योजना (2014)— यह योजना थीम-आधारित पर्यटन सर्किट विकसित करने के उद्देश्य से शुरू की गई। जैसे – बौद्ध सर्किट, रामायण सर्किट, तटीय सर्किट, हिमालयन सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट। इस योजना के अंतर्गत बुनियादी ढांचे जैसे सड़क, वॉशरूम, रेस्ट हाउस, साइनेज आदि का निर्माण किया गया।

प्रसाद योजना (PRASAD & Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual Augmentation Drive)— यह योजना धार्मिक स्थलों के पुनरोद्धार और आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए 2015 में शुरू की गई। प्रमुख स्थानों में— अमृतसर (पंजाब), मथुरा (उत्तर प्रदेश), अजमेर (राजस्थान), गया (बिहार), पुरी (ओडिशा)

देखो अपना देश अभियान (2020)— कोविड-19 के बाद घरेलू पर्यटन को पुनर्जीवित करने के लिए यह डिजिटल अभियान चलाया गया। इसका उद्देश्य लोगों को भारत के विविध पर्यटन स्थलों से परिचित कराना है। ई-पर्यटन पहल, ई-बीजा सुविधा, 160 से अधिक देशों के नागरिकों के लिए ई-टूरिस्ट बीजा सुविधा। अतिथि देवो भवः, आतिथ्य उद्योग में सेवा गुणवत्ता और सुरक्षा बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण अभियान। इनक्रेडिबल इंडिया 2.0 भारत की छवि को विश्व पटल पर मजबूत करने के लिए नया डिजिटल एवं विजुअल ब्रांडिंग अभियान।

पर्यटन के लिए प्रोत्साहन योजनाएं— राष्ट्रीय पर्यटन पुरस्कार, राज्यों, संगठनों और व्यक्तियों को उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया जाता है। वित्तीय सहायता, होटलों, गाइड्स, ट्रैवल एजेंसियों आदि को वित्तीय सहायता और ऋण प्रदान किया जाता है। राज्य स्तरीय योजनाएं, प्रत्येक राज्य ने अपनी अलग-अलग पर्यटन नीति बनाई है जैसे उत्तराखंड की पर्यटन निवेश योजना, केरल का हाउस बोटिंग एवं आयुर्वेद पर्यटन आदि।

हालांकि योजनाएं प्रभावी रही हैं, लेकिन केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय की कमी, विपणन एवं प्रचार में एकरूपता का अभाव, ग्रामीण पर्यटन में निवेश की कमी, निजी क्षेत्र की सीमित भागीदारी, आदि कुछ समस्याएं अब भी विद्यमान हैं।

इसलिए नीति निर्माताओं को इन योजनाओं का समय-समय पर मूल्यांकन कर संशोधन करना चाहिए, जिससे पर्यटन क्षेत्र अधिक समावेशी, सुरक्षित और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बन सके। कोविड-19 ने पर्यटन को सबसे अधिक प्रभावित किया। 2020 में विदेशी पर्यटकों की संख्या में 76: गिरावट दर्ज की

गई। सरकार द्वारा राहत पैकेज, ऋण सहायता, ऑनलाइन प्रमोशन, घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देने की पहल की गई।

कोविड-19 का प्रभाव और पुनरुद्धार की रणनीतियाँ— कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर पर्यटन उद्योग को अभूतपूर्व झटका दिया, और भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। लॉकडाउन, अंतरराष्ट्रीय और घरेलू उड़ानों पर प्रतिबंध, होटल और होमस्टे सेवाओं की अस्थायी बंदी, तथा लोगों की यात्रा करने की अनिच्छा ने इस क्षेत्र को ठप कर दिया। आंकड़ों के अनुसार, 2020 में भारत में विदेशी पर्यटकों की संख्या में 75–80 प्रतिशत की गिरावट आई, जिससे हजारों पर्यटन व्यवसाय प्रभावित हुए। जिसका प्रमुख प्रभाव राजस्व में भारी गिरावट, पर्यटन से होने वाला प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष राजस्व लगभग शून्य के करीब पहुंच गया। रोजगार पर प्रभाव, पर्यटन क्षेत्र से जुड़े लाखों लोगों, जैसे गाइड, ट्रैवल एजेंट, होटल स्टाफ, टैक्सी ड्राइवर आदि की नौकरियां खतरे में पड़ गईं। आतिथ्य क्षेत्र का संकट, होटल, रिसॉर्ट और रेस्त्रां उद्योग भारी घाटे में चले गए और कई संस्थान स्थायी रूप से बंद हो गए। सांस्कृतिक एवं विरासत स्थलों की उपेक्षा, पर्यटन से प्राप्त आय के अभाव में कई ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण कार्यों में बाधा आई। लघु और मध्यम पर्यटन व्यवसायों पर गंभीर प्रभाव, छोटे टूर ऑपरेटर्स, होमस्टे संचालक, हस्तशिल्प विक्रेता आदि की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई।

महामारी के पश्चात, पर्यटन क्षेत्र के पुनरुद्धार हेतु विभिन्न रणनीतियों को अपनाया गया है एवं भविष्य की नीतियों को सशक्त बनाया जा रहा है।

1. घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहन— भारत सरकार और राज्यों ने देखो अपना देश जैसे अभियानों के माध्यम से देशवासियों को घरेलू पर्यटन के लिए प्रेरित किया। इससे यात्रा और आतिथ्य उद्योग को पुनर्जीवित करने में सहायता मिली।
2. डिजिटल ट्रांजिशन और स्मार्ट पर्यटन— कोविड-19 ने डिजिटल टेक्नोलॉजी को अपनाने की आवश्यकता को तीव्र किया। कई स्थलों पर ई-टिकटिंग, वर्चुअल टूर, डिजिटल गाइडेंस और संपर्करहित सेवाओं की शुरुआत हुई।
3. स्वास्थ्य और स्वच्छता मानकों का पालन— 'सुरक्षित पर्यटन' के मानकों को अपनाया गया, जिसमें होटल, ट्रैवल एजेंसी और गाइड्स को सर्टिफिकेशन प्राप्त हुआ। 'SAATHI' (System for Assessment- Awareness and Training for Hospitality Industry) जैसी पहलें शुरू की गईं।
4. वित्तीय सहायता एवं ऋण योजनाएँ— सरकार द्वारा पर्यटन व्यवसायों के लिए विशेष आर्थिक पैकेज और आपातकालीन ऋण गारंटी योजनाएं लाई गईं।
5. ग्रामीण और ईको-टूरिज्म को बढ़ावा— कोविड के बाद शहरी भीड़ से दूर प्राकृतिक और ग्रामीण क्षेत्रों की ओर झुकाव बढ़ा। इस प्रवृत्ति को समझते हुए सरकार ने ईको-टूरिज्म, होमस्टे और विलेज टूरिज्म को प्राथमिकता दी।
6. कौशल विकास और पुनः प्रशिक्षण— पर्यटन से जुड़े मानव संसाधनों को नई चुनौतियों के अनुसार प्रशिक्षित करने के लिए कौशल विकास कार्यक्रम चलाए गए, जैसे डिजिटल गाइडेंस, कोविड-सुरक्षा प्रोटोकॉल आदि।
7. राज्यों के विशेष प्रयास— राजस्थान, उत्तराखंड, केरल, गोवा, तमिलनाडु आदि राज्यों ने राज्य-स्तरीय नीतियाँ अपनाकर अपने पर्यटन स्थलों को पुनः सुचारु करने के प्रयास किए।

8. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग— महामारी के बाद 'Incredible India' अभियान को पुनर्जीवित कर, भारत को एक सुरक्षित, विविध और समृद्ध पर्यटन गंतव्य के रूप में प्रस्तुत किया गया।

निष्कर्षतः, कोविड-19 ने पर्यटन उद्योग को एक संकट में डाल दिया था, परंतु इस संकट ने आत्ममंथन और नवाचार की संभावनाएं भी दीं। भारत ने इस चुनौती को अवसर में बदलने के प्रयास किए हैं, और सतत विकास, तकनीकी अनुकूलन, तथा स्थानीय पर्यटन पर ध्यान केंद्रित करके एक लचीले पर्यटन तंत्र की ओर बढ़ रहा है।

सतत पर्यटन और पर्यावरणीय संतुलन— पर्यटन उद्योग के निरंतर विकास के साथ यह आवश्यक हो गया है कि इसके पर्यावरणीय प्रभावों को समझते हुए इसे सतत (नेजंपदंड्सम) रूप में विकसित किया जाए। सतत पर्यटन का अर्थ है ऐसा पर्यटन विकास जो वर्तमान और भविष्य की आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय आवश्यकताओं को संतुलित करता है, साथ ही स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक अखंडता, पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता की रक्षा करता है। सतत पर्यटन वह प्रक्रिया है जिसमें पर्यटन गतिविधियों से उत्पन्न लाभों को अधिकतम किया जाता है और पर्यावरणीय, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक प्रभावों को न्यूनतम किया जाता है। यह न केवल पर्यावरण संरक्षण को महत्व देता है, बल्कि स्थानीय लोगों की भागीदारी, सामाजिक न्याय और आर्थिक अवसरों के वितरण को भी प्राथमिकता देता है। पर्यटन का विस्तार प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, वन, जीव-जंतु, और भूमि पर दबाव डालता है। विशेष रूप से पारिस्थितिकीय रूप से संवेदनशील क्षेत्रों (जैसे हिमालय, पश्चिमी घाट, सुंदरवन, आदि) में अंधाधुंध पर्यटन से वनों की कटाई, प्रदूषण, जैव विविधता की क्षति और जल स्रोतों के ह्रास की समस्या उत्पन्न होती है। अतः पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना आवश्यक है ताकि इन संसाधनों का दीर्घकालिक उपयोग संभव हो। भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारें सतत पर्यटन को प्रोत्साहन देने हेतु कई प्रयास कर रही हैं, ईको-टूरिज्म भारत में कर्नाटक, उत्तराखंड, केरल, और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में ईको-टूरिज्म को बढ़ावा दिया गया है। यह स्थानीय समुदायों को सशक्त करने, जैव विविधता संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करने का माध्यम बन रहा है। वेस्ट मैनेजमेंट प्रैक्टिसेज़, पर्यटक स्थलों पर कचरा प्रबंधन, प्लास्टिक के प्रयोग पर प्रतिबंध, स्वच्छता अभियानों जैसे उपायों को अपनाया जा रहा है। कॅरिंग कैपेसिटी निर्धारण, कई पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों की अधिकतम संख्या निर्धारित की जा रही है ताकि क्षेत्रीय पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। सामुदायिक भागीदारी, स्थानीय जनजातीय और ग्रामीण समुदायों को पर्यटन योजनाओं में शामिल कर रोजगार, संस्कृति संरक्षण और सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया जा रहा है। हालांकि सतत पर्यटन की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं, लेकिन पर्यावरणीय जागरूकता की कमी, स्थानीय समुदायों की सीमित भागीदारी, अपर्याप्त पर्यावरणीय नियमन और निगरानी, विकास और संरक्षण के बीच संतुलन बनाए रखने में कठिनाई, आदि कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

सतत पर्यटन और पर्यावरणीय संतुलन भारत के पर्यटन क्षेत्र के समग्र और दीर्घकालिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यदि पर्यटन विकास में पर्यावरणीय संवेदनशीलता, सामाजिक समावेशन और आर्थिक स्थिरता को संतुलित किया जाए, तो यह न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान करेगा, बल्कि देश की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगा।

डिजिटल युग और पर्यटन उद्योग— आज का युग डिजिटल तकनीकों और सूचना संचार प्रौद्योगिकी का युग है। इस तकनीकी विकास ने पर्यटन उद्योग को भी अत्यंत प्रभावित किया है और इसके संचालन, प्रचार-प्रसार, बुकिंग, मार्केटिंग और अनुभव प्रदान करने के स्वरूप को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है।

भारत में पर्यटन उद्योग ने डिजिटल युग की इस लहर का भरपूर उपयोग करते हुए न केवल देशी-विदेशी पर्यटकों तक पहुँच बनाई है, बल्कि अनुभव-आधारित पर्यटन को भी एक नया आयाम दिया है। डिजिटल परिवर्तन ने पर्यटन क्षेत्र में कई तकनीकी नवाचारों को जन्म दिया है। इनमें प्रमुख हैं— ऑनलाइन ट्रेवल एजेंसियाँ, MakeMyTrip, GoIbibo, ClearTrip, Yatr आदि जैसे पोर्टल्स ने टिकट बुकिंग, होटल रिजर्वेशन और पैकेज बुकिंग को सहज और पारदर्शी बना दिया है। डिजिटल भुगतान प्रणाली, UPI, क्रेडिट/डेबिट कार्ड, डिजिटल वॉलेट ने पर्यटन को कैशलेस और अधिक सुरक्षित बनाया है। मोबाइल एप्स और जीपीएस तकनीक, पर्यटन स्थलों की खोज, दिशा-निर्देश, भाषा अनुवाद, रेस्तरां/होटल सुझाव, आपातकालीन सेवाओं तक पहुँच इन तकनीकों से सरल हुई है। आभासी पर्यटन, विशेषकर COVID-19 के बाद, वर्चुअल रियलिटी और 360-डिग्री वीडियो के माध्यम से पर्यटक बिना यात्रा किए स्थलों का अनुभव ले सकते हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब, ट्रिपएडवाइजर जैसे प्लेटफॉर्मों ने पर्यटन स्थलों की ब्रांडिंग में क्रांति ला दी है। ट्रेवल ब्लॉगर, ब्लॉगर और इन्फ्लुएंसर विश्व स्तर पर भारतीय पर्यटन की छवि को सशक्त बना रहे हैं। IncredibleIndia जैसे अभियानों को सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक प्रचार मिला। पर्यटक अपनी यात्रा के अनुभव साझा कर दूसरों को प्रेरित करते हैं, जिससे word of mouth मार्केटिंग की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। भारत सरकार ने डिजिटल इंडिया के अंतर्गत पर्यटन क्षेत्र में निम्नलिखित पहलों को बढ़ावा दिया है। डिजिटल युग ने पर्यटन उद्योग को एक नई गति और दिशा दी है। यदि इस तकनीकी विकास को स्थानीय समुदायों की भागीदारी, पर्यावरणीय सतर्कता और समावेशी नीति निर्माण के साथ जोड़ा जाए तो यह पर्यटन को एक समावेशी, सतत और लाभकारी उद्योग के रूप में स्थापित कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय तुलना— भारत बनाम अन्य प्रमुख देश— पर्यटन उद्योग वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। भारत जैसे विशाल सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता वाले देश के लिए पर्यटन का क्षेत्र अपार संभावनाएं प्रदान करता है, परंतु जब हम भारत की तुलना अन्य प्रमुख देशों से करते हैं, तो कई अंतर सामने आते हैं चाहे वह पर्यटक आगमन संख्या हो, अवसंरचना हो, प्रचार रणनीति हो या स्थायित्व। इस खंड में भारत की तुलना विशेष रूप से फ्रांस, थाईलैंड, अमेरिका और चीन जैसे देशों से की जा रही है।

फ्रांस बनाम भारत— फ्रांस विश्व में सबसे अधिक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। 2022 में फ्रांस में लगभग 90 मिलियन पर्यटक आए, जबकि भारत में यह संख्या लगभग 17 मिलियन थी। फ्रांस में सुसंगठित पर्यटन अवसंरचना, जैसे रेलवे, होटलों की विविधता और पर्यटन सूचना केंद्रों की व्यवस्था।

थाईलैंड बनाम भारत— थाईलैंड दक्षिण एशिया में पर्यटन विकास का प्रमुख उदाहरण है। 2019 में थाईलैंड में लगभग 40 मिलियन पर्यटक आए। मुख्य विशेषताएँ— कम लागत, सरल वीजा नीति, और 'थाईलैंड स्माइल' जैसे ब्रांडिंग अभियान। समुद्र तट, आयुर्वेद, नाइटलाइफ और साहसिक पर्यटन का प्रचार। भारत की तुलना में अधिक लचीली नियामकीय नीतियाँ।

अमेरिका बनाम भारत— संयुक्त राज्य अमेरिका पर्यटन से लगभग 2 ट्रिलियन डॉलर का आर्थिक लाभ प्राप्त करता है। डिजिटलीकरण, वैश्विक विज्ञापन अभियान और पर्यटक-हितैषी कानून, पर्यटन से जुड़े रोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा देने वाले तंत्र, राष्ट्रीय उद्यान, सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक शहरी पर्यटन का संतुलन सफलता के कारण है।

चीन बनाम भारत— चीन भी भारत की तरह विशाल सांस्कृतिक विरासत और भौगोलिक विविधता वाला देश है, किंतु उसने पर्यटन के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को अधिक सशक्त बनाया है। उच्च निवेश और

नियोजन के तहत पर्यटक स्थल का विकास, घरेलू पर्यटन को भी प्राथमिकता, तकनीकी नवाचार का उपयोग — QR कोड आधारित प्रवेश, ऑटोमेटेड गाइडिंग सिस्टम महत्वपूर्ण पहलू हैं। जब भारत की तुलना अन्य प्रमुख देशों से की जाती है, तो यह स्पष्ट होता है कि भारत के पास अपार प्राकृतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर है, लेकिन संरचनात्मक, प्रबंधन और विपणन के मोर्चे पर सुधार की आवश्यकता है। यदि भारत इन अंतरराष्ट्रीय अनुभवों से प्रेरणा लेकर सुनियोजित प्रयास करे, तो वह पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर अग्रणी भूमिका निभा सकता है।

तालिका-02

देश	पर्यटक संख्या	आय (USD में)	वैश्विक रैंक (2023)
फ्रांस	89 मिलियन	+70 बिलियन	1
भारत	19 मिलियन	+30.5 बिलियन	22
चीन	65 मिलियन	+45 बिलियन	5

निष्कर्ष— भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह न केवल विदेशी मुद्रा अर्जन का प्रमुख स्रोत है, बल्कि यह रोजगार सृजन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षेत्रीय विकास का भी माध्यम बनता जा रहा है। इस शोधपत्र में प्रस्तुत विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पर्यटन का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान बहुआयामी है यह सेवा क्षेत्र के विस्तार, बुनियादी ढाँचे के विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका सृजन में सहायक सिद्ध हो रहा है। इतिहास और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारत का पर्यटन उद्योग विविध रूपों में विकसित हुआ है धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, चिकित्सा, साहसिक, ग्रामीण और विरासत पर्यटन जैसे विभिन्न स्वरूपों ने इसकी समृद्धि को नया आयाम दिया है। विभिन्न राज्यों में पर्यटन का असमान विकास दर्शाता है कि संभावनाएँ तो व्यापक हैं, किन्तु उनके दोहन हेतु रणनीतिक प्रयासों की आवश्यकता है। इस दिशा में डिजिटल तकनीक, स्मार्ट टूरिज्म और सतत विकास की अवधारणा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हालाँकि, यह क्षेत्र अनेक चुनौतियों से भी जूझ रहा है, जैसेकृबुनियादी ढाँचे की कमी, सुरक्षा और स्वच्छता के मुद्दे, मौसमी निर्भरता, प्रशिक्षण की कमी और कोविड-19 जैसी वैश्विक आपदाएँ। इन सभी बाधाओं के बावजूद भारत सरकार की 'इन्क्रेडिबल इंडिया' और 'देखो अपना देश' जैसी योजनाएँ पर्यटन को वैश्विक मंच पर प्रतिस्पर्धी बनाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास हैं। आज जब डिजिटल युग में यात्रा की योजना से लेकर अनुभव साझा करने तक सभी गतिविधियाँ ऑनलाइन हो चुकी हैं, भारत को अपनी सांस्कृतिक विविधता, आध्यात्मिक समृद्धि और जैविक पर्यटन स्थलों को तकनीक के माध्यम से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। साथ ही, सतत पर्यटन की दिशा में पर्यावरणीय संतुलन, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और पारंपरिक मूल्यों के संरक्षण पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यदि पर्यटन उद्योग की चुनौतियों का रणनीतिक समाधान किया जाए और इसकी संभावनाओं को सही दिशा में विकसित किया जाए, तो यह भारत को न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध बना सकता है, बल्कि वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर उसकी विशिष्ट पहचान को भी सुदृढ़ कर सकता है।

सिफारिशें / सुझाव (Recommendations)–

- ✚ संविधानिक रूप से पर्यटन को संवर्तनीय उद्योग के रूप में मान्यता देना चाहिए, ताकि इससे संबंधित योजनाएं अधिक प्रभावशाली और क्रियान्वयन योग्य बन सकें।
- ✚ राज्य और केंद्र सरकारों के बीच बेहतर समन्वय से पर्यटन ढांचे को विकसित किया जा सकता है, विशेष रूप से बुनियादी ढांचे (सड़क, बिजली, इंटरनेट, स्वास्थ्य सेवा) में।
- ✚ स्थानीय समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि पर्यटन से उन्हें भी प्रत्यक्ष लाभ मिल सके और उनकी संस्कृति को भी प्रोत्साहन मिले।
- ✚ इको-टूरिज्म, हेरिटेज टूरिज्म और मेडिकल टूरिज्म जैसे विशिष्ट क्षेत्रों को प्राथमिकता देकर भारत की विविधता को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- ✚ डिजिटल टूल्स और तकनीक का अधिकाधिक उपयोग पर्यटन अनुभव को बेहतर बनाएगा।
- ✚ सुरक्षा और स्वच्छता के वैश्विक मानकों को अपनाकर भारत को एक World-Class Destination के रूप में विकसित किया जा सकता है।
- ✚ संवेदनशील पर्यावरणीय स्थलों पर पर्यटन की सीमा और दिशानिर्देश तय किए जाएं, जिससे जैव विविधता को नुकसान न पहुंचे।
- ✚ प्रशिक्षित टूर गाइड्स और स्थानीय भाषाओं में सूचनात्मक सामग्री से पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध बनाया जा सकता है।
- ✚ टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी पाठ्यक्रमों को रोजगारोन्मुखी बनाना आवश्यक है, जिससे युवाओं के लिए व्यापक रोजगार सृजन हो सके।
- ✚ निजी क्षेत्र, स्टार्टअप्स और CSR गतिविधियों को पर्यटन में निवेश के लिए प्रेरित करना चाहिए, ताकि नवाचार और प्रतिस्पर्धा को बल मिले।

सन्दर्भ सूची–

- 1–भारत का पर्यटन भूगोल, डॉ. के.एस. गौतम ISBN 9789386011189
- 2– भारतीय पर्यटन– एक परिचय, प्रो. राजेंद्र त्रिपाठी ISBN 9788174823421
- 3– पर्यटन उद्योग का विकास, डॉ. रमेश चंद्र वर्मा ISBN 9788194029842
- 4– भारत में सांस्कृतिक पर्यटन, डॉ. शालिनी मिश्रा ISBN 9788173053522
- 5– हिमालयी पर्यटन, संभावनाएँ और चुनौतियाँ, डॉ. भूपेंद्र नेगी ISBN: 9789383927155
- 6– पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन, डॉ. अशोक कुमार ISBN 9789380227258
- 7–पर्यावरणीय पर्यटन और विकास, डॉ. वी.पी. सिंह ISBN 9789383305762
- 8– भारत में धार्मिक पर्यटन, डॉ. राधेश्याम शर्मा ISBN 9789350023713
- 9– सतत पर्यटन विकास, डॉ. नीता जोशी ISBN 9789388885009
- 10– पर्यटन और भारतीय संस्कृति, डॉ. मीना श्रीवास्तव ISBN 9789381036040
- 11– विश्व पर्यटन– एक अध्ययन, डॉ. शिवराज सिंह ISBN 9789352070579

RESEARCH STREAM**A Bi-Annual, Open Access Peer Reviewed International Journal**

Volume 01, Issue 02, December 2024

- 12– भारत में पर्यटन योजनाएँ, डॉ. एन.एन. वर्मा ISBN 9788176253417
- 13– डिजिटल पर्यटन, डॉ. अम्बुज त्रिपाठी ISBN 9788193761026
- 14– उत्तर भारत में पर्यटन विकास, डॉ. अर्चना सक्सेना ISBN 9788172113463
- 15– अंतरराष्ट्रीय पर्यटन प्रबंधन, डॉ. एल.एन. मिश्रा ISBN 9789381212364
- 16– भारत की आर्थिक संरचना में पर्यटन, डॉ. सुभाष रावत ISBN 9788193684240
- 17– भारत सरकार की पर्यटन नीतियाँ, डॉ. संगीता द्विवेदी ISBN 9788192958694
- 18– भारत में होटल और हॉस्पिटैलिटी प्रबंधन, डॉ. नवीन तिवारी ISBN 9789350024970
- 19– ईको-टूरिज्म और पर्यावरण संरक्षण, डॉ. विपिन अग्रवाल ISBN 9788193939906)
- 20– भारतीय राज्यों में पर्यटन संभावनाएँ, डॉ. मनोज चतुर्वेदी ISBN 9788194070196)
- 21- Ministry of Tourism, Government of India – Annual Reports 2022-2023
- 22- Government of India – Swadesh Darshan Scheme Reports
- 23- World Economic Forum – Travel and Tourism Competitiveness Report 2023
- 24- Economic Survey of India 2023–24
- 25- FICCI – Tourism Sector Reports
- 26- Incredible India Campaign – Promotional Materials
- 27- Statista-com – India Travel Industry Statistics
- 28- The Hindu, Times of India, Business Standard – Tourism- related articles
- 29- Indian Tourism and Hospitality Report – IBEF, 2023
- 30- World Bank – India Tourism Data 2022